PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 8, ISSUE 2

'कटा हुआ आसमान' उपन्यास में महानगरीय जीवन

मोहमद अझहरोद्दीन म. जब्बारोद्दीन

मुख्याध्यापक
उर्दू हायस्कू तथा
डॉ. अल्लमा एकबाल उच्च माध्यमिक विद्यालय,
धर्माबाद, ता. धर्माबाद, जि.नांदेड.
भारत भारत

21 वी सदी के हिंदी साहित्य में महानगरीय जीवन को लेकर अधिक मात्रा में लिखा जा रहा है| क्यों कि वर्तमान समाज का व्यक्ति आपने-आपको विकास की दृष्टि से देख रहा है और वह आत्मकेंद्रीत एवं स्वयंतक ही सीमित हो रहा है| आज के भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, बाजरीकरण और आर्थिक जर्जता मे व्यक्ति खुद को झोंक रहा है औरउनके कहे अनुसार भाग दौड कर रहा है| वह अर्थ प्रतिष्ठा एवं प्रसिध्दी पाने के पिछे तो भाग रहा है लेकिन वह गाँव माता-पिता, नाते-रिश्ते एवं संस्कार भूलता जा रहा है| इस तरह के लोगों में किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति दया सहानुभूति नही रहती है| वह सिर्फ अपना परिवार, स्वयं को ही बचाने की कोशिश करता है| इसका सरल अर्थ है कि आज का व्यक्ति महानगर में बसने के बाद स्वार्थी बन गया है, तथा आपने आप को एक साँचे में बद कर अपनी सोच को भी सीमित कर लिया है, व्यक्ती पैसे कमाने के उद्देश से महानगर में आया था और वह जीवन का मूल्य ही भूल गया है| वर्तमान हिंदी साहित्य विधाओं में इस समस्या का चित्रण सुक्ष्मता से हो रहा है| इसे समाज के सामने लाने में सभी लेखक एवं लेखिकाएँ अपना योगदान दे रहे हैं| जिससे समाज में आ रहे बदलाव को वे भलि भाँति जान सके और उसमें परिवर्तन कर एक जागृति निर्माण कर सके| महानगरीय जीवन को लेकर उपन्यास साहित्य में भी अनेक जीवन पध्दतियाँ सामने आ रही है| जिसमें जगदंबा प्रसाद दीक्षित

के उपन्यासों का भी महत्वपूर्ण योगदान हैं| 21 वी सदी के कथा शिल्पियों में जगदंबा प्रसाद दिक्षित जी का नाम विशेष रुप से उल्लेखनिय है| दीक्षितजी बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी है| एक योग्य और सफल प्राध्यापक के साथ-साथ एक यशस्वी पत्रकार भी वे रहे है| मार्क्सवाद से भी वह प्रभावित थे| समाज के निम्नस्तर वर्ग की पीडा शोषण, अभाव, गरीबी, जहालत के आपा-धापी, अस्थिर मन को उन्होंने सिर्फ अपनी रचनाओं में चित्रित ही नहीं किया है, वरन उनके जीवन की विदुषताओं के जीवन को काफी करीब से देखा है| और इसका वर्णन उन्होंने कटा हुआ आसमान उपन्याय में किया है|

'कटा हुआ आसमान' जगदंबा प्रसाद दीक्षित द्वारा सृजित उपन्यास है, जिसमें मुंबई के महानगरिय जीवन की अभिव्यक्ति है| प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु काफी संक्षिप्त है| कम से कम पात्रों एवं घटनाओं के द्वारा इसका बाना बुना गया है| इस उपन्यास का केंद्रिय पात्र प्रो.रमेश नौटियाल है| ग्रामीण संस्कारों में पला बढा शिक्षित नौटियाल अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधी से विभूषित है और रोजी रोटी की तलाश में अपने माँ, भाई और बहन को छोडकर मुंबई आया हुआ है| प्रो.नौटियाल भाग्य का कुछ ऐसा प्रबल रहा कि, मुंबई के एक नामी कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक के रुप में उनकी नियुक्ती भी हो गई| देखा जाए तो यही से विवेच्य उपन्यास की शाखाएँ विस्तारित होनी शुरु हो जाती है|

कॉलेज का माहौल अंग्रेजी और अंग्रेजियत से सरोबार है| मुंबई का बहुत ही पुराना और प्रख्यात होने के कारण महानगर के अधिकतर धनवानों और बडे घरों के बच्चे, उसमें पढना अपनी शासन समझते है| उनके लिबास चाल-ढाल बोलने के अंदाज में भी अंग्रेजियत बेशुमार है| उसी कॉलेज में एक फैशन परस्त चुलबुली, शौक, अमीर बाप की बिगडी बेटी किटी भी पढती है, जो प्रो.नौटियाल के आकर्षक परसनेलिटी से इस तरह प्रभावित होती है कि वह उनके करीब आने से आपने आप को रोक नही पाती है| चूँकी किटी एक अमीर बाप की बेटी है, इसलिए धन की उसे कोई कमी नही है| वह प्रोफेसर नौटियाल को हॉटलो, समुद्र तटो, सिनेमा हॉलो तथा अन्य दूसरे स्थलों पर ले जाया करती है|

नौटियाल जो कि ग्रामीण परिवेश में बडा हुआ है, उसके संस्कार उसे बार-बार इस तरह की उन्मुक्तता से गुजरती है| वह किटी से दूर होना चाहता है लेकिन मुंबई में अपना कोई न होने की वजह से, जो अकेलेपन की त्रासदी है, उससे घबरा जाता है| वैसे अकेलापन दोनों की जिंदगी में है और कुछ समय के बाद दोनों निकट ही नही आते, वरन एक दिन जुहू के होटल सी-शोर में बाकायदा कमरा बुक कराकर अपनी शारीरिक सुख को मिटाते भी है| प्रो.नौटियाल को इसके पूर्व इसतरह का अनुभवन नहीं

था, उसके संस्कार मन मे कही गहरे बसे हुए थे, लेकिन महानगर के विवश होकर किसी के पास जाना ही पडता है| लेकिन किटी को यह एक सुखानुभूति महसुस होती है| वह महानगरीय जीवन में बडी-बडी हुई है इसलिए उसे इस संबंध में नैतिक-अनैतिक, मर्यादा-अमर्यादा जैसे, विचारों के लिए अवकाश ही कहाँ है| किटी मुक्त ख्यालों की किशोरी है| जीवन की ऊँची नीची सीढियों से उसको कोई मतलब नहीं है| वह नही जानती की जिस पथ पर उसने अपने कदमों को बढाया है, उसका क्या होगा?

किटी के पिता को किटी और प्रो.नौटियाल के प्रगाढ रिश्तों और रोमांस की जानकारी मिली तो उन्होंने प्रिंसिपल से मिलकर प्रो.नौटियाल के खिलाफ शिकायत कर उसे कॉलेज से निकालने की बात भी की मुंबई के गटरों में रहने वालो को अपने कॉलेज में प्रोफेसर बना लिया है| ताकि वे अच्छी फॅमीलीज की लडकियों को बिगाड दे, विवश होकर प्रा.नौटियाल को इस्तिफा देना पडा क्योंकि इसके अतिरिक्त उसके पास दूसरा कोई विकल्प भी तो नही बचा था| किटी के पिता मिस्टर खोसला ने अपनी बेटी को अमृतसर भेज दिया, जहाँ एक उच्चवर्ग के काले कटुन्म युवक के साथ उसे अग्नि के सात फेरे लगाकर परिणय सूत्र में बंधना पडा|

कथानक का दूसरा पहेलू आजाद हिंद गेस्ट हाऊस है, जिससे जुडे सभी पात्र जो.रमेश नौटियाल की तरह ही अलग-अलग प्रांतो से आए है| केरला, कोकोनट पाम्स, जिला नदिया बंगाल और मापुसा (गोवा) से आए हुए चेरियन, बॅनर्जी भ्यासक अपने अपने घर परिवार से दूर इस महानगर में संत्रास, घुटन, यंत्रणाएँ और अकेलेपन की नियति को झेलने के लिए अभिशाप है| आजाद गेस्ट हाऊस में रहने वालों की मजबूरियाँ कमोवेश एक जैसी ही है| चेरियन अपने अकेलेपन को भुलाने के लिए कच्ची शराब और घटना का सहारा लेता है| माँ की मृत्यु का समाचार सुनकर गाँव तो वह जाता है, पर वापसी के लिए उसके पास पैसों का अभाव है| बॅनर्जी मोसाय टी.बी. की बिमारी से शहर को छोड देता है| प्रो.नौटियाल का कॉलेज से त्यागपत्र देना पडता है| सबके भागने के अपने अपने ही सबब है| उपन्यासकार के शब्दों में और शहर खोई हुई आवाजों का उडते हुए पक्षी जिनके घोंसले खो गये हैं| एक धरती गुजर रही है, एक शवयात्रा की भीड, एक चौडी सडक पर हर आदमी अपनी लाश को कंधों पर उठाए घिसटता जाता है, खोई हुई दिशा की कह नही सिर्फ कोलतार आसमान कही नही सिर्फ धुआँ| पोधे कुचले हुए स्टेशनोपर भिक मांगते हुए चीखते हुए इंजना फुटपाथों पर सडा हुआ गोश्त बिकता है| गंदी चार पाईयों पर चिमनियाँ पिघती है, उगलती उगलती है, कात्ती जिंदगी को गुबारा भागने लगता है|

पूरा शहर मुंबई महानगर के लोगों में प्यास कुंठा, संत्रास, अजनबीपन, अकेलापन, भाग- दौड, बाजारीकरण, आर्थिक लोलुपता, संस्कारों में बदलाव को लेखक ने बडी गहराई के साथ चित्रित किया है| मनुष्य अपनी छोटी-छोटी इच्छाओंको पुरा करने के लिए जिस प्रकार नैतिकता, अनैतिकता के विचार से परे मर्यादाओं का उल्लंघन करता है, उसे इस कथानक में देखा जा सकता है| विवेच्य उपन्यास जिस कथानक जिस जीवन को अभिव्यक्त करता है, वह पुरी तरह से उपर उठा हुआ और अस्थिर दिखाई पडता है| पुरे उपन्यास में बिखराव दिखाई देता है| बिखराव के कारण ही समीक्षकों ने इसे चेतना प्रवाही विधि कहा है जबकि स्वंय लेखक का कहना है इसे लोगों ने चेतना प्रवाही कहा है, लेकिन ऐसा कहना ठीक नही| इस शैली में आंतरीक चेतना के साथ-साथ बाह्य वस्तुगत तत्वों का भी पूरी तरह समावेश है| मानव मन किस प्रकार बाह्य परिस्थितीयों से प्रभावित होता है, इस प्रक्रिया को हम इस शैली में देख सकते है| चिंता धारा के बिखराव के बावजूद इस प्रकार की समाविष्ठता कथा मे अभिव्यक्त होती है| पुरे उपन्यास में बीच-बीच में रखे गए वाक्य चिंतन विश्लेषण विधि की याद दिलाते है| कथानक में प्रो.नौटियाल जब मध्यम वर्गीय समाज के बारे में सोंचते है, उसके रिति रिवाजों, मिथ्या मान्यताओं तथा खोखले आदर्शो की वर्गिय उकेरता है तब वह व्यंग्यीय शैली का सहारा लेता है| उपन्यास मे सांकेतिकता, संप्रेषणीयता और गंभीरता को इस प्रकार अंकित किया गया है कि समग्रता में उपन्यास काफी प्रभावशाली बन गया है|

कथा संयोजन में बिखराव के बावजूद उसमें एकरसता बनी रहती है, कहीं पर भी बोझिलता का अहसात नही होता लेकिन रोजी-रोटी की जो समस्या नौटियाल के सामने उभरती है वह हमे पुरे उपन्यास में देखने को मिलता है| एक और लोगों के पास पैसा ही पैसा ही और नौटियाल के पास अर्थशास्त्र की उपाधी होने के बावजूद भी नौकरी और पेट पालने के लिए संर्घष करना पडता है और मुंबई जैसे शहर में अजनबी बनकर अपना जीवन व्यतित करना पडता है| एक बात विशेष रुपसे स्विकारणी पडेगी की प्रो.नौटियाल को जो जीवन पुरे उपन्यास मे था वह भाग दौड का ही था| वह कही पर भी टिक नही पाता है और जिस विचार से वह मुंबई जैसे महानगर में आया था तब वह अपने गाँव के संस्कारों से पुरी तरह बंधा था, लेकिन यहाँ पर अपने ही कॉलेज के छात्र किटी के प्रेम जाल में फस जाता है, जो कि अमिर बाप की बेटी थी, जिसका परिणाम नौटियाल को भुगतना पडता है| इससे यह पता चलता है कि महानगरों में रहनेवाले पुँजीपति लोगों को किसी बात की फिक्र नहीं होती है लेकिन वे भी अपने संस्कारों

को भुलाकर पाश्चात्य संस्कारों को अपना कर मुक्त भोगी बन गये है| पुरे उपन्यास में यही कथानक दिखाई देता है|

अंतत: कहा जा सकता है कि, कटा हुआ आसमान में लेखक ने मुंबई महानगर बिखरे हुए जीवन को अंकित किया है| अस्तित्वादी बोध का प्रयोग हुआ है| अकेलापन, बिखराव, खालीपन, बाजारीकरण, भौतिकता, आर्थिक, लोलुप्ता समणीकरण, संकीर्णीकरण आदि जीवन में परिवर्तन के लिए भाग-दौड के बीच मनुष्य कही न कही अपने आपको तनहा पाता है और उससे उभारणे के लिए किसी न किसी का सहारा लेता है| जैसे चेरियन ने कच्ची शराब की लत लगा ली थी और प्रो.नौटियाल किटी को भोगता रहा इससे ही व्यक्तियों की समस्या नही हल होती है| क्योंकि महानगरों मे बसा हुआ व्यक्ति अपने आप को अकेला तो महसुस करता है लेकिन उसके साथ-साथ वह कही का भी नही रहता है| वह द्वंद्व मनस्थिती में अस्थिर होकर अपना जीवन यापन करता है| इसलिए महानगर की चकाचौंध भरे जीवन में ग्रामीण व्यक्ति अपने आप को आर्थिक परिस्थितयों से तो उभारणा चाहता है किंतु वह उसमे पुरी तरह से घुलमिल नही पाता है| इसलिए उसके जीवन में अकेलापण, संत्रास, भाग दौड, आपा-धापी निरंतर चलते रहती है और वो कभी स्थिर होकर एक जगह नहीं रह पाता है| इसका ही वर्णन जगदंबा प्रसाद दीक्षित जी ने अपने उपन्यास में किया है और इससे लोगों को सचेत कर उनको अधिक भाग दौड न करने और किसी लत में न गिरने की सलाह दी है|

संदर्भ ग्रंथ सुची:

1) व्यक्ति और साहित्य - उदय शंकर भट्ट
2) हिंदी उपन्यास एक नयी दृष्टि - डॉ.इंद्रनाथ
3) आधुनिक हिंदी उपन्यास - भीस्म सहानी मदान
4) कटा हुआ आसमान - जगदंबा प्रसाद दीक्षित